आत्मा को तृप्त बनाने आया बाप

करने पूरी दिल की अधूरी सब आशायें

भक्त तुम कहलाते जब पढाई कर सपूर्ण बनते

कर्मातीत बन योगी तुम कहलाते

विनाश की हो रही तैयारी

कोई भी आश दिल में न रखो

किसी में भी आँख न अब डूबे

ऐसे विशाल बुद्धि बन दिखलाओ

हदों से निकल बेहद में रहो

बाप और वरसे की की याद से

खुशी का पारा चढ़ा सदा रहता

जो त्रिकाल दर्शी होते पास्ट ,प्रेंसंट ,फ्यूचर

देख हर बोल ,कर्म और वाणी में लाते

और सफलता संपन्न बन जाते

पवित्रता को धारण करके

परमानंद के सुख प्राप्त करते

मेरा बाबा
ॐ शांति!!